सुहासिनि.उंकिलि, शोधार्थिनी
हिन्दी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय
विशाखापट्टणम, आंध्र प्रदेश
Suhasini.u06@gmail.com

## समाज-वृद्धि में मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यासों का योगदान

**प्रस्तावना :**

किसी भी साहित्य का अध्ययन करने से हम यह जानते हैं कि उसमें तत्कालीन समाज का प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है। साहित्य और सामाज दोनों सिक्के के दो पहलू हैं| साहित्य समाज में स्थित समस्याओं को लेकर उनके सामाधानों के बारे में हमें पथ-प्रदर्शन करता है| समाज में स्वार्थभाव, अंध विश्वास, अशिक्षा आदि के कारण कई कुरीतियाँ विद्यमान थी| जैसे ऊँच-नीच, राजनीति, सवी-प्रथा, बाल-विवाह, मजदूरों का शोषण, नारी- - शोषण आदि हमारे साहित्यकारों ने इन्हें अपनी रचनाओं में विभिन्न तरीकों में चित्रित किया गया।। श्रीमद्भगवद्गीता, रामायण, महाभारत, भागवत, उपनिषद आदि मनुष्य को जीने का रास्ता दिखाते हैं| रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस, ज्योतिराव फूले, राजा राम मोहन राव जैसे कई महान पुरुषों ने जनता को सत्य, धर्म, न्याय, अहिंसा, भक्ति मार्ग में ले जाकर उनेक जीवन को सार्थक बनाने के लिए प्रयास किया| हिन्दी साहित्य में भी कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, सुभाद्राकुमारी चौहान, माहादेवी वर्मा, प्रेमचंद जैनेन्द्र, यशपाल, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मृणाल पाण्डे, मालती जोशी, मैत्रेयी पुष्पा, आदि ने अपनी रचनाओं के द्वारा तत्कालीन समाज में स्थित कुप्रथाओं को दूर करने का प्रयास किया।

**मुख्य बिन्दु :**

समाज की अभिवृद्धि में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का योगदान, निष्कर्ष।

**समाज अभिवृद्धि में मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यासों का योगदान :**

हिन्दी साहित्य में अभी तक कई विधायें जन्म ली थी जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, एकांकी, पत्र लेखन आदि उसमें से उपन्यास विधा ने अपना सीधा संबंध मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं से बना दिया| इसलिए यह विधा अत्यधिक लोक प्रचलित हुई। महिला उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा जी ने तत्कालीन समाज में विद्यमान कुप्रथाओं को चित्रण करने के लिए इस विधा को चुन लिया था। उन्होंने अपने उपन्यासों में समाज में मौजूद कुरीतियाँ जैसे बाल-विवाह, नारी शिक्षा, अनमेल विवाह, विवाह विच्छेद, विधवा विवाह, संयुक्त परिवार का विच्छेद, पुरुष प्रधान समाज, नैतिक मूल्यों का विच्छेद आदि को लेकर ज्यों का त्यों उल्लेख किया। उन्होंने इसके लिए अपने उपन्यासों में कई पात्रों को स्थान दिया| इन पात्रों के जरिए समस्याओं का समाधान देते हुए

जनता में जागृति लाने की पूरी कोशिश की थी। पुष्पा जी के सारे उपन्यासों का एकमात्र लक्ष्य था कि समाज को अभिवृद्धि की दिशा की ओर ले जाना मानव सामाजिक प्राणी है। वह समाज में सभी लोगों के साथ मिलजुलकर रहता, बल्कि अकेला नहीं रह सकता| मानव समाज में रहकर अपनी आवश्यकताओं को पूरी कर पाता है उसके साथ-साथ समाज के नियमों का पूरा पालन ही करता है। समाज में आधुनिकता, पाञ्चात्य शिक्षा, औद्योगीकरण, तकनीकी आदि के कारण भारतीय मूल्यों में बदलाव आ गया है। इसके वजह से मानव के परिप्रेक्ष्य में भी तब्दीली आ गई हैं। मानव और समाज दोनों में आए हुए तब्दीली के कारण उत्पन्न हुए टकराव को मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया। मैत्रेयी पुष्पा जी ने 'विजन' उपन्यास में चिकित्सा क्षेत्र में फैली अमानवीय अव्यवस्था को अनेक - पात्रों के माध्यम से ईमानदारी से प्रस्तुत किया। इसमें डॉ. नेहा नामक एक कुशल चिकित्सक का परिचय दिया गया। वह गरीब लड़की थी। डाक्टरशरण एक आई- सेंटर की स्थापना करता है। उसमें धन की लालच ज्यादा है। इसकारण वह जितना ध्यान पैसों को देता उतना मरीजों को नहीं उन्होंने अपने बेटे के लिए भी पैसों से डिग्री खरीदता है। वह अपने बेटे अजय की शादी डाॅ नेहा के साथ करने के लिए तैयार होता है। लेकिन नेहा डोनेशन द्वारा डिग्री प्राप्त किए अजय को शादी करने से इनकार करती है। परंतु उसके पिता अपनी बेटी की शादी अजय से ही करता है। शादी के बाद नेहा स्वयं को सौभाग्यशाली मानती है। डॉक्टर शरण अपनी बहू एक कुशल चिकित्सक होनेपर भी उसे मरीजों को चिकित्सा करने के लिए अवसर नहीं देकर ओ. टी. पी. विभाग में बिठा देता है। क्योंकि डॉक्टर नेहा के द्वारा किए गए चिकित्सा से मरीजों को कुछ घंटों के बाद घर वापस भेजा जाता था | डॉक्टर शरण ने पैसों की लालच में मरीजों को कई दिनों तक अस्पताल में रखना चाहता है। एक दिन डॉक्टर शरण के द्वारा का चिकित्सा करते समय मरीज मृत्यु हो जाती है। अंत में नेहा ही अस्पताल को संभालती है।

इस उपन्यास में आभा नामक एक लड़की भी है। वह अमीर परिवार की लड़की है। उसकी शादी डॉ. मुकुल के साथ हुई है। डॉ. मुकुल एक साधारण परिवार का लड़का है। दोनों के विचारों में भी बहुत अंतर है।डॉ मुकुल अपनी पत्नी डॉ. आभा को घर के काम-काजों में बांधना चाहता है। डॉ. आभा एक शिक्षित, कुशल और पेशे के प्रति जिम्मेदारी दिखाने वाली लड़की है। दोनों के विचारों में भेद-भाव के कारण अंत में आभा अपने पति मुकुल से तलाक लेती है। मैत्रेई पुष्पा जी ने 'विजन' उपन्यास में आर्थिक असमानता, दांपत्य-जीवन, संबंध विच्छेद, आदि समस्याओं का सजीव चित्रण किया है। शादी में हमेशा दोनों परिवारों का स्तर समान होना चाहिए पढ़ी-लिखी नारी आत्मनिर्भर होते हैं। स्त्री के लिए तलाक मुक्ति है। लेकिन तलाक लेने से दोनों अपने जीवन में दुख का अनुभव करते हैं। 'विजन' उपन्यास में नैतिक मूल्यों का विच्छेद भी दिखाई पड़ता है| डॉ. शरण पैसों के लालच में डुबकर, नैतिक मूल्यों को भूलकर अपने आई सेंटर में मरीजों को कई दिनों तक रखदेता है। डा. नेहा के माध्यम से अनैतिकता को इनकार हुए समाज की अभिवृद्धि में मैत्रेई पुष्पा जी ने अपना योगदान दिया है।

'बेतवा बहती रही' उपन्यास में गरीब किसान मोहन सिंह प्रधान पात्र है। उसके दो बच्चे हैं- लड़का अजीत और लड़की ऊर्वशी वह अपनी निर्धनता के कारण बेटा अजीत को ही पढ़ाता है, बेटी को नहीं पढ़ाता उर्वशी की सहेली मीरा, बरजोर सिंह की बेटी थी ऊर्वशी के भाई अजीत को वन- विभाग में नौकरी मिलती है। पिता अपने बेटे से कहता है कि एक अच्छे लड़के को ढूंढ कर ऊर्वशी की शादी करवादी अजीत पैसों को खर्च करना नहीं चाहता है। इसलिए एक बूढ़े आदमी को ढूंढकर लाता है। मोहन सिंह बहुत दुखित हो कर मीरा के नाना के पास जाकर अजीत के व्यवहार के बारे में शिकायत करता है। मीरा के नाना अजीत को कई तरह से समझाने की कोशिश करती है, लेकिन अजीत नहीं मानता है। अंत में ऊर्वशी की शादी वकील सर्वदमन के साथ होती है। उन्हें देवेश नामक बेटे को जन्म देते हैं। ऊर्वशी के पति का अचानक एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है। इसलिए जेठ ने ऊर्वशी को अपनी बेटी की तरह घर पर देखभाल करते हैं। ऊर्वशी के भाई आकर अपनी बहन को साथ ले जाता है।

लेकिन वहाँ भाभी ऊर्वशी और देवेश को अच्छी तरह से नहीं देखती। इस वजह से ऊर्वशी फिर ससुराल वापस लौटती है। इधर अजीत पर अनेक आरोप लगने के कारण उसकी नौकरी भी छूट जाती है। इसलिए अजीत अपने गाँव के प्रधान मीरा के पिता बरजोर सिंह के पास कई बार आता है। दोनों के सोच मेल खाने लगते हैं। इसी वजह से अजीत अपनी बहन ऊर्वशी की दूसरी शादी बरजोर सिंह के साथ करना चाहता है। मीरा के दो भाई भी थे विजय और उदय | बीमारी के कारण विजय की मृत्यु हो जाती है। ऊर्वशी उसकी पत्नी को अजय के साथ शादी करने की सलाह देती है। लेकिन बरजोर सिंह इस शादी का विरोध करता है। ऊर्वशी की तबीयत ठीक न होने पर उसके पति उसे दवा के स्थान पर जहर देता है। इसलिए उसकी मृत्यु हो जाती है।

"बेतवा बहती रही' उपन्यास में संयुक्त परिवार का विच्छेद दिखाई पड़ता है। बरजोर सिंह संपत्ति के लालच में परिवार से अलग रहना चाहता है। मैत्रेयी पुष्पा जी संयुक्त परिवार का समर्थन करते हुए कहती है कि संयुक्त परिवार में छोटे बच्चों की रक्षा, नैतिक मूल्यों की शिक्षा बड़ों के द्वारा मिलती है। सारी आवश्यकताओं की पूर्ति सम्मिलित परिवार में ही संभव है। इस उपन्यास में दाम्पत्य संबंध का विच्छेद की समस्या पर भी प्रकाश डाला गया है| बैरागी की शादी बचपन में हो जाती हैं। बड़े होने के बाद अपनी पत्नी को छोड़ कर चले जाते हैं। पति अपनी पत्नी को छोड़ने के लिए कई कारण बताया है जैसे क्रूरता, ईर्ष्या, अहम, स्वार्थ भाव आदि | मैत्रेयी पुष्पा जी दांपत्य- संबंध विच्छेद के कई कारण बताते हुए उसे सफल बनाने की प्रेरणा भी देती है। इस उपन्यास में बाल विवाह की समस्या का चित्रण भी मिलता है। विजय की शादी छोटी सी लड़की के साथ होती है। मैत्रेयी पुष्पा जी बाल-विवाह के कारण उत्पन्न होनेवाली समस्याओं को समझती है। जैसे लड़की अपना कार्य खुद नहीं संभालना, शारीरिक, मानसिक रूप से दृढ़ नहीं होना आदि| अतः मैत्रेयी पुष्पा जी बाल विवाह को रोकने के लिए कोशिश भी करती है।

इस उपन्यास में विधवा समस्या भी दिखाई पड़ती है। विधवा ऊर्वशी की शादी अपने भाई के स्वार्थ के कारण बूढ़े बरजोर सिंह के साथ कर देता है। अंत में ऊर्वशी विजय की मृत्यु होने पर उसकी पत्नी की शादी अजय के साथ करती है। मैत्रेयी पुष्पा ने विधवा-विवाह को स्वीकार किया है क्योंकि इससे उनका जीवन सुखमय बन जाएगा। भारतीय समाज में विधवाओं की हालत बहुत शोचनीय होती है। इसलिए इस समस्या का समाधान अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया। इस उपन्यास में नैतिक मूल्यों का विच्छेद भी दिखाया गया है। ऊर्वशी के भाई पैसों के लालच में अपनी बहन की शादी बूढ़ा बरजोर सिंह के साथ कर देता है। मैत्रेयी पुष्पा जी इस तरह अपने उपन्यासों में कई स्थानों पर नैतिक मूल्यों का विच्छेद को दिखाया और उनका उन्मूलन समझाते हुए समाज को अभिवृद्धि की दिशा में ले जाने का सफल प्रयास भी किया।

**निष्कर्ष :**

मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने उपन्यासों में समाज में विद्यमान कई समस्याओं का विश्लेषण किया । उन्होंने अपने उपन्यासों में सारे समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया | इस तरह समाज की वृद्धि में अपने उपन्यासों के माध्यम से आदर्श योगदान देते हुए हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में अपने स्थान को निर्धारित किया है।

**संदर्भ-ग्रंथ सूची :**

1. प्रो. टी. मोहन सिंह, हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ बी. आर. अम्बेडकर सार्वत्रिक विश्वविद्यालय,हैदराबाद।

2. मैत्रेयी पुष्पा, विजन उपन्यास, रजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

3. मैत्रेयी पुष्पा, 'चेतवा बहती रही' उपन्यास ।